© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

शतपथ ब्राह्मण में सांस्कृतिक तत्त्व

शिखा पाण्डेय
शोधच्छात्रा, संस्कृत–विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

शतपथ ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेद का एक बृहत्काय ब्राह्मण ग्रंथ है। जिसमें सौ अध्याय है। यह शुक्ल यजुर्वेद की दोनों शाखाओं में प्राप्त हैं। शतपथ ब्राह्मण के महत्त्व को सर्वाधिक गौरवान्वित करने का श्रेय उसके यज्ञभागों के विधिवत् वर्णन से है। यज्ञ का प्रारंभ सृष्टि के प्रारंभ से ही है किन्तु पहले यह कम समय में अधिक लाभ की दृष्टि से होता था, परन्तु कुछ समय पश्चात् यज्ञ का अनुष्ठाान इतना विधिवत् बढ़ गया कि ब्राह्मण युग ही यज्ञ संस्था के पूर्ण विकास का युग हो गया। शतपथ ब्राह्मण में यज्ञों की विवेचना के साथ ही साथ सांस्कृतिक तत्वों का भी विपुल भण्डार विद्यमान है। हमारे सामाजिक जीवन का यथातथ्य वर्णन शतपथ में मिलता है। शतपथ ब्राह्मण में प्रतिपादित सांस्कृतिक तत्वों को निम्न बिंदओं से समझ सकते हैं–

1. **अतिथि देवो भव की संकल्पनाः–** शतपथ ब्राह्मण में यह कहा गया है कि यदि हम किसी आगंतुक मनुष्य को खिलाने से पहले खुद खा लेते हैं तो यह सर्वाधिक अनुचित है और यह तो और भी अनुचित है यदि हम देवों को खिलाने से पहले खा लेते है।[1] इससे स्पष्ट होता है कि हमारे लिए अतिथि की सेवा सर्वोपरि है।

इस विषय में याज्ञवल्क्य का कहना है कि यदि कोई व्यक्ति अतिथि से पहले खा भी लेता है तो वह इस प्रकार खाये कि उनका गणना न खाने के बराबर हो।[2]

शतपथ ब्राह्मण में यह कहा गया है कि जो व्रत करता है वह देवों के समीप होता है। अतः वह वहीं सोता है जहां यज्ञानुष्ठान करता है। अतः हमेशा अपने अतिथि के नीचे (धरती पर) सोना चाहिए, क्योंकि जो सेवा करता है वह हमेशा विनम्र/नम्र भाव से करता है।[3]

2. **नियम पूर्वक कार्य करने की प्रेरणाः–** शतपथ ब्राह्मण में प्रत्येक यज्ञ प्रक्रिया नियम पूर्वक की जाती है। जो नियम पूर्वक नहीं करता है। वह पाप का भागीदार बनता है। जैसे एक अनुष्ठान है कि जल और अग्नि के बीच में न होकर निकले, क्योंकि स्त्री–पुरुष के जोड़े के बीच में नहीं पड़ना चाहिए। न तो सीमा से आगे बढ़ाकर और न सीमा प्राप्त करने के पहले । यदि सीमा से आगे बढ़ाकर रखेगा तो जल और अग्नि में जो परस्पर विरोध है उसे बढ़ा देगा। यदि सीमा को प्राप्त किये बिना ही रख देगा तो कामना की पूर्ति नहीं होगी। इसलिए जल का प्रणयन ठीन उत्तर में करना चाहिए।[4]

3. **एकता का निरुपण/प्रदर्शनः–** शतपथ ब्राह्मण में यह कहा गया है कि यदि व्यक्ति अकेला होता है तो उसमें शक्ति नहीं होता है यदि वह समूह में रहता है तो वह शक्ति से परिपूर्ण हो जाता है। उसे कोई हरा नहीं सकता, जैसे पात्रों को दो–दो करके ले जाता है अर्थात् सूप और अग्निहोत्र हवणी, स्फ्या और कपाल, शमी और कृष्ण चर्म मृग, उखली–मूसल, छोटे–बड़े पत्थर, ये दस हो गये। विराट छन्द में दस अक्षर होता है। यज्ञ भी विराट है। इस प्रकार यज्ञ को विराट रुप देता है। दो–दो करके सुदृढ़ होता है। दो से सन्तान होती है, इस प्रकार यज्ञ को प्रजनन शील बनाता है।[5]

4. **समाज का स्वरुपः–** शतपथ ब्राह्मण में समाज का जो स्वरुप प्रस्तुत किया गया है वह सभी अवस्थाओं में प्रासंगिक है। आज जो हमारे समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री समाज को बनाने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ बने हुए है वह स्वरुप शतपथ ब्राह्मण में विद्यमान है। इसमें यह कहा गया है कि वही समाज समद्धिशाली होगा जिसमें उपभोक्ता कम तथा उपभोग की वस्तुएँ अधिक होंगी। जैसे कहा गया है–जुहु में चार बार लेता है इसलिए कि खाने वाला परिमित और छोटा हो जाएं। उपभृत में 8 बार लेता है कि खाद्य पदार्थ अपरिमित और बहुत हो जाय। जहां खाने वाला छोटा होता है और खाद्य पदार्थ बहुत हो, वहां समृद्धि का सूचक है।[6]

5. **शीघ्र कार्य करने की प्रेरणाः–** कोई भी कार्य प्रारंभ करें तो उसे यथासमय ही पूर्ण करें। कल के भरोसे नहीं छोड़े, इसका सटीक वर्णन शतपथ ब्राह्मण में प्राप्त होता है।–

कल के ऊपर कोई कार्य न डाले, क्योंकि कौन जानता है कि कल क्या होगा।[7]

श्रीमद्भगवद्गीता में भी कर्म करने की प्रेरणा दी गयी है। जैसा कर्म होगा उसी के अनुसार फल की प्राप्ति होगी। अतः व्यक्ति को अच्छे कर्म करना चाहिए जिससे अच्छे फल की प्राप्ति हो।

6. **विज्ञानः–** शतपथ ब्राह्मण में पंच वायु का सांगोपांग वर्णन है। इन्हीं पंच वायु से संसार संचालित है। शतपथ में कहा गया है अग्नि पवमान के लिए आहुति इसलिए देता है कि प्राण ही पवमान है। जब बच्चा उत्पन्न होता है तब प्राण का संचार होता है, और जब उत्पन्न नहीं होता तब मां के प्राण से सांस लेता है और जब वह उत्पन्न होता है तो उसमें प्राण आ जाता है।[8]

6. **दान–दक्षिणाः–** शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि कोई भी कार्य कराये तो उसे मुफ्त में न कराये। यदि आपके पास कुछ न हो तो अन्वाहार्य ही दे दें। शतपथ में यह भी बताया गया है कि दक्षिणा का नाम दक्षिणा कैसे पड़ा? मारा हुआ यज्ञ शक्ति रहित हो गया (दक्ष न रह गया)। देवों ने दक्षिणा के देकर उसको दक्ष बनाया, इसलिए दक्षिणा नाम पड़ा। इस दक्षिणा के द्वारा उस यज्ञ को दक्ष बनाया गया। यज्ञ समृद्धशाली हो जाता है यदि दक्षिणा दी जाती है।[9]

6. **सत्य की महत्ताः–** शतपथ में यह कहा गया है कि जब कोई सत्य बोलता है तो मानों वह अग्नि पर घी छिड़कता है, क्योंकि उससे वह प्रज्वलित करता है। उसका तेज दिन–प्रतिदिन बढ़ता जाता है। उसका

कल्याण होता है। किन्तु यदि कोई झूठ बोलता है वह मानों जलती हुयी आग पर पानी डालता है क्योंकि वह इस प्रकार कमजोर करता है। दिन प्रतिदिन उसका तेज कम होता जाता है और वह दिन प्रतिदिन पापी होता जाता है, इसलिए सत्य बोलना चाहिए।[10]

सन्दर्भ सूची–

[1]. शतपथ ब्राह्मण 1/1/1/8

[2]. शतपथ ब्राह्मण 1/1/1/9

[3]. शतपथ ब्राह्मण 1/1/1/11

[4]. शतपथ ब्राह्मण 1/1/2/21

[5]. शतपथ ब्राह्मण 1/1/2/22

[6]. श0ब्रा0 1/3/2/12, 2/3/2/18 तद्वै समद्धं यस्य कनीया सो भार्या असन्भूया भार्या असन्भूया सः पशवः।

[7]. न श्वः श्वमुपासीत को हि मम नुष्यस्य श्वो वेद, श0ब्रा0 2/1/3/9

[8]. श0ब्रा0 2/2/1/10

[9]. श0ब्रा0 2/2/2/2

[10]. तस्य कनीयः कनीय एव तेजो भवति श्वः श्वः पापीयान्भवति तस्मादु सत्यमेव वदेत्।